International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 07, July 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

21वीं सदी में हिन्दी सनेमा

राजेश पाण्डेय

सनेमा को समाज में गूँजने वाली ध्वनियों की प्रतिध्वनी माना जाता है। रुपहले पर्दे की कहानी समाज के बीच से होकर ही निकलती है।हमारे देश में 'थ्री सी' काफी लोक प्रय है पहला क्रकेट , दूसरा क्राइम और तीसरा सनेमा,यह हमारे देश में धर्म की तरह है और इसका जुनून आज भी दर्शकों के ऊपर सर चढकर बोलता है। समय के साथ 21वीं सदीमें सनेमा का बाजार काफी वस्तृत हुआ है और यह बाजार घरों में तक आ गया है सनेमा बनाने और बेचने का ही नहीं बल्कि सनेमा देखने का भी ढंग बदल गया है , सनेमा टेली वजन वीसीडी और इंटरनेट के माध्यम से घर-घर में पहुंच गया है बड़े महानगरों को छोड़ या छोटे शहरों और कस्बों में भी मल्टीप्लेक्स के माध्यम से इसकी पहुंच बन गई है , सनेमा का बाजार काफी वस्तृत हुआ है।इस दौर में सनेमा की सफलता के मायने भी बदल गए हैं दर्शकों को फल्में कतनी पसंद आई इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है क फल्मों ने कतने करोड़ की कमाई की और यह कमाई ही उस फल्म के टीम की सफलता है।

21वी सदी के सनेमा में निर्माता-निर्देशक और वतरक का पूरा ध्यान कमाई पर रहता है और इससे फल्म के बारे में सोचने उसे बनाने दर्शकों तक पहुंचाने में उनका पूरा ढंग बदल गया है ,समाज में क्या हो रहा है वो फल्मों में देखने को मलता है और जो फल्मों में हो रहा है , वो समाज में भी हमें दिखता है। सनेमा आने वाले कल को परख लेता है।

छुआछूत, धा र्मक-जातिगत भेदभाव ,सामंतवाद , बाल ववाह, दहेज़ प्रथा,भ्रष्टाचार जैसी बुराइ यों से 21 वीं सदी में भी समाज मुक्त नहीं हो पाया हैं।ले कन अब बदलता हुआ भारत अलग तरीके से सोचता है, अलग तरीके से देखता है , दिखाता भी है। और साफ है- आज समाज के साथ फल्मोंर में भी ये बदलाव दिख रहा है। समस्यातएं तो हैं अब उसकासमाधान भी है। अड़चन है तो उसे दूर करने का जुनून भी है। भारत बदल रहा है, भारत अपना हल खुद ढूंढ रहा है।ये नये दौर में सनेमा के वषय बन रहे हैं।

हमारी फल्मों ा की बहुत बड़ी भू मका है। ये फल्में ही हैं जो पूरे वश्व में भारतीयता का प्रतिनि धत्वग करती हैं। भारतीय फल्में ं भारतीयता का आईना रही हैं। दुनिया को भी वो अपनी ओर आक र्षत करती रही हैं। हमारी फल्मेंय बॉक्से ऑ फस पर तो धूम मचाती रहती हैं साथ ही पूरे वश्व् में भारत की साख बढ़ाने भारत का ब्रांडबनाने में भी बहुत बड़ी भू मका निभातीहैं।समुदाय को नैरेटिव की जरूरत होती है और समुदाय लोगों से बनते हैं, जो बढ़ते हैं और वक सत होते हैं।

कहानी, कथ्य, शल्प, प्रस्तुति, वषय और बिजनेस हर स्तर पर फल्म इंडस्ट्री ने नये दौर में बदलाव कये है,परंपरा की कौन सी चीजो को नकारें और कौन सी चीजों को अपनाएं , ये हमारी बुद्घि और ववेक पर निर्भर होना चाहिए। न क पूर्वाग्रहों आज इस तकनीकी युग में एक ओर जहां वैश्विक दूरी खत्म होती जा है तो वहीं दूसरी ओर मनुष्य-मनुष्य के बीच की आपसी दूरी बढ़ती ही जा रही है। 21वीं सदी को तकनीक , वज्ञान, इंटरनेट, सूचनाओं की सदी और अब तो डजिटल युग आदि नाम दिया जा रहा है। इस सदी का सर्वा धक शक्तिशाली तंत्र , सूचना तंत्र है। समूचा वश्व समुदाय सूचनाओं के संजाल के ऊपर टिका हुआ है।भूमंडलीकरण ने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी है क अब मनुष्य स्थानीय के साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से भी मतलब रखने लगा है। आज जिस वश्व ग्राम की बात की जाती है, उसका आशय इसी से है क अब हर एक राष्ट्र का मनुष्य दूसरे राष्ट्र के खान-पान , पहनावे,भाषा, फल्म, राजनीति और उत्पाद से जुड़ने लगा है।

साहित्यकारअशोक वाजपेयी का मानना है की- "सनेमा अब वह शक्तिशाली माध्यम बन चुका है , जिससे समाज में रिवोल्यूशन लाया जा सकता है। आज ज्यादातर सनेमा में वही दिखाया जाता है, जो वाकई समाज में घट चुका है या घट रहा हो। यह दर्शक व समाज के एक्सपीरिएंस , नॉलेज व सेंसेबि लटी पर निर्भर करता है।"

समाज और साहित्य का अनुनाश्रय संबंध है , मानव जीवन में इसका शाश्वत महत्व है | सनेमा अपने उत्पत्ति से लेकर अब तक के , बहुत कम समय में जन लोक प्रय और रचनात्मक माध्यम बन गया है| वह बिम्ब और प्रतीकों के माध्यम से समाज की चत्वृत्तियों को गढता रचता चलता है | यह जादू का वह पटारा है जो क्षण भर में समाज के चत्र को प्रस्तुत कर देता है और आसानी से अपनी भाव भं गमा के माध्यम से दर्शक-श्रोता तक पहुंच जाता है।

साहित्य की व्यापकता इसी में है क वह अपने फलक में समूची मानवता को प्रभा वत करने का मद्दा रखता है | मानवता की लोक कल्याणकारी दृष्टि साहित्य के लए महत्वपूर्ण है , यह बाहरी दुनिया के साथ-साथ हमारे मन के भीतर की दुनिया का भरपूर चत्रण करता है, यह अपने तथ्यों व वश्लेषण से हमारे जीवन में हमेशा नई-नई प्रेरणाओं को भरता है | सनेमा में एक आकर्षण है , जो अपनी बात को समाज तक प्रस्तुत कर सकता है ,क्यों क इस बात से सभी वा कफ हैं क साहित्य प्राचीन कला है और सनेमा आधुनिक कला | सनेमा मनोरंजन के साथ-साथ हमारी सभ्यता , संस्कृति ,इतिहास ,भाषा ,वर्तमान तथ्य पर पूर्ण दृष्टि डालता है , यह दोनों समाज के अ भन्न अंग है, दोनों का केंद्र बिंदु समाज ही है |

समाज वह नहीं है , जो कल तक था और आने वाला कल में वह कुछ और ही होने जा रहा है , समय का यह मुकाम सचमुच बड़ा रोचक होगा , ऐसे में सनेमा में बहुत हलचल है , इसमें एक नया दर्शक वर्ग है, रचनात्मकता के नए दौर उसके लए खुले हैं |

सनेमा समाज का छोटा भाई है , समाज, सनेमा व साहित्य एक त्रिभुज की तरह तीन कोणों आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए है।इस नये सदी में मनुष्य अब उपभोक्ता हो गया है। मनुष्य का जीवन सर्फ वकास की सरकारी परिभाषाएं नहीँ है ,उसका सौंदर्य वराट है , उसके अर्थ असीम है,उसके आयाम व वध है। बहरहाल , अपने ही देश के दर्शकों से कटा यह सनेमा मुख्य रूप से अप्रवासी भारतव शयों के मनोरंजन के लए पल्ल वत हुए। वदेशी बाजार में क्लेक शन आया और वह भी डॉलर में..... यही वजह है क कुछ इतिहासकार ऐसी फ़ल्मों को डॉलर सनेमा या एन.आर.आई. सनेमा कहना पसंद करते है। व्यवसाय और प्रभाव के लहाज से ऐसी फ़ल्मों का व्यापक असर हुआ। रातों-रात सभी निर्माता-निर्देशकों ने देशी दर्शकों से पल्ला झाड़ लया। हालां क इन फ़ल्मों में भी ज्यादातर देसी इमो शन होते थे, ले कन वदेशी लोके शन अवश्य रहते थे। जो निर्माता-निर्देशक वदेशी पृश्ठभू म मे पूरी फ़ल्म न हीं सोच पाते थे। वे कम से कम गानों के लए स्विटजरलैंड जैसे देशों में फुर्र हो जाते थे, यह दौर काफी लंबा चला।

"इस दशक में सनेमा के वषयों में समलैं गकता , लव-इन-रिलेशन, वेश्यावृत्ति, अनैनिक संबंध आदि ऐसे वषय जो कहीं-न-कहीं भारतीय समाज और संस्कृति पर आघात करते है। ले कन भारत का बदलता हुआ समाज कसी-न- कसी रूप में इन फ़ल्मों को भी स्वीकारोक्ति प्रदान करता हुआ नजर आता है। हमारे सामाजिक ताने-बाने में व्याप्त बुराइयों को उजागर करती है और हमारी व्यवस्था पर प्रश्न चह्न खड़ा करती है। यही वह सनेमा है जो हमें झकझोरता है ,सोचने पर मजबूर करता है। समाज और देश के प्रति अपने दायित्वों को निभाने के लए यही सनेमा एक शक्ति बनकर सामने आता है । सामाजिक ताने-बाने और बुराईयों को उजागर करती उनेक ऐसी फल्में आयी,जिन्होंने समसामयिक दर्शक और सामाजिक व्यवस्था के व्यावहारिक पहलुओं की अ मट छाप छोड़ी। जिसमें लगे रहो मुन्नाभाई ,गंगाजल,अपहरण,लज्जा,रंग दे बंसती ,पेज थ्री ,तारे जमीन पर,जेल,आरक्षण,राजनीति,पान संह तोमर,खोंसला का घोंसला , ट्रै फक संगल , मुंबई एक्सप्रेस , रेनकोट आदि।"

21वीं सदी का हिंदी सनेमा कई ज्वलंत सवालों को उठाना एक जो खम समझता है और उससे बचने की को शश करता है। वह सच को दिखाने के बजाय परंपरा और फैंटेसी को ज्यादा तरजीह देता है। यह डर, जेंडर और सेक्सुअ लटी के सवालों पर नही है , जिसकी समस्या भारत में है। ले कन ये वषय वमर्श का हिस्सा हैं इस लए हिंदी सनेमा में इन मुद्दों पर वदेशी फल्मों का प्रभाव देखने को मलता है। ले कन कुछ अपवादों को छोड़कर ज्यादातर निर्माता परंपरागत रवैया अपनाते हैं। व्यावसायिक फल्मों की बढ़ती लोक प्रयता ने की मुद्दों को पीछे छोड़ दिया हैं ।प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद अनेक हिंदी फल्मों ने सामाजिक बदलाव में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. व पन शर्मा अनह्द, नई सदी का सनेमा, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली,2018,
2. प्रयदर्शन, नया दौर का नया सनेमा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2015
3.अनिल भार्गव, भारतीय सनेमा का इतिहास, सनेसाहित्य प्रकाशन, जयपुर, 2016,
4. अजय ब्रह्मत्मज, टॉकीज सनेमा का सफर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018,
5.आलोक पाण्डेय,समाज में सनेमा, मी डया वमर्श सनेमा वशेषांक,नई दिल्ली, 2012,
6.हंस, पत्रिका, हिंदी सनेमा के सौ साल, वशेषांक, फरवरी 2013,
7.योजना, पत्रिका, स्वतंत्रता दिवस, 1995 वशेषांक,
6. आजकल, पत्रिका, सनेमा के 100 वर्ष, अक्टूबर 2012, प्रकाशन वभाग, दिल्ली,
7. आजकल, पत्रिका, सनेमा और समाज,भाग-1, नवंबर 2018, प्रकाशन वभाग, दिल्ली,
8.आजकल, पत्रिका, सनेमा और समाज,भाग 2, दिसंबर 2018, प्रकाशन वभाग, दिल्ली,
9.अहा! जिंदगी, सनेमा वशेषांक, जून 2013 अंक, प्रकाशन, दैनिक भास्कर समूह, जयपुर,
11. अहा! जिंदगी, सनेमा वशेषांक, जून 2014 अंक, प्रकाशन, दैनिक भास्कर समूह, जयपुर,
12. अहा! जिंदगी, सनेमा वशेषांक, जून 2015 अंक, प्रकाशक, दैनिक भास्कर समूह,जयपुर,